7

# चकई के चकदुम

सुरेश कुमार मिश्रा*

बालगीत सुनना और गाना बच्चों के संवेदनशील विकास का बालप्रिय माध्यम माना जाता है। बालगीत सुनना-सुनाना बच्चों की रुचियों में एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। यह बच्चों को पढ़ाई के बोझ से राहत दिलाती है। साथ ही उनकी कई अवधारणाओं को सरल तरीके से सुलझा भी देती है। आजकल के दौर में जहाँ टीवी व कार्टून बच्चों को अकेला कर देते हैं वहीं बालगीत बच्चों को आपस में तथा बड़ों के करीब लाकर आत्मीयता, शब्द भंडार में वृद्धि तथा सामाजिकता में वृद्धि करते हैं। निरंतर बालगीत सुनना और गाना बच्चों को साहित्य से जोड़कर रखता है।

चकई के चकदुम... बालगीत की यह पंक्ति सुनते ही बच्चों के कान खड़े हो जाते हैं। बच्चे मस्ती से झूमने लगते हैं। उनकी रुचि व उत्साह देखते ही बनता है। आखिर ऐसा क्यों है कि अधिकतर सभी को बालगीत सुनना अच्छा लगता है। अनेक व्यक्ति तो बहुत बखूबी तथा रुचिकर तरीके से बालगीत गाते व गुनगुनाते हैं। किंतु ऐसा क्या है सुनीता में? सुनीता बालगीतों के बारे में आखिर क्या जानती है, जिससे जब वह बालगीत गाती है तो सारे कक्षा का वातावरण सम्मोहित-सा हो जाता है। वह अपने गाने सुनाने और प्रस्तुत करने के ढंग को बड़ी सरलता से बालगीत की पुस्तक में उपलब्ध तस्वीरों से जोड़ देती है। ऐसा लगता है जब सुनीता बोल रही है तो पुस्तक की तस्वीरें भी सजीव हो उठती हैं। उसे पता है बालगीत में प्रस्तुति किस तरह की होनी चाहिए, कहाँ स्वर में आरोह-अवरोह का ध्यान रखना है आदि। बालगीत सौंदर्यानुभूति विकास का एक ऐसा ही पहलू है।

ऐसा कोई न होगा जिसे कोई न कोई बालगीत न आता होगा। सभी को अपने-अपने समय के पढ़े गए बालगीतों की कोई न कोई पंक्ति याद तो रह ही जाती है। वैसे तो बालगीत छोटे, बड़े, वृद्ध सभी को थोड़े-बहुत आते ही हैं। फिर चाहे 'मछली जल की रानी' हो या फिर 'एक कौआ प्यासा था' ही क्यों न हो। बालगीत श्रव्य-दृश्य रूप, खेल-खेल में, फ़िल्म, दूरदर्शन और धारावाहिक, कठपुतली के खेल अथवा रंगमंच पर नाटक के रूप आदि में किसी न किसी ढंग से आकर्षित करते ही आए हैं।

## बालगीत— सुनाना और गाने गुनगुनाना ध्यान आकर्षण की एक कला

क्या सभी लोग बालगीत मनोरंजक तरीके से सुना पाते हैं? शायद हाँ। शायद नहीं। दरअसल बालगीत सुनाना या गाना एक कला है। किंतु क्या टेलीविज़न और इंटरनेट के युग में बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी,

*राज्य संसाधक, शिक्षा विभाग, तेलंगाना, हैदराबाद

© NCERT not to be republished

नाना-नानी से बालगीत सुनना पसंद करते हैं? इससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि क्या हम अपने बच्चों को बालगीत सुनाते हैं या बालगीत सुनाने के लिए समय निकाल पाते हैं? ऐसे ही कई प्रश्न बड़े शहरों में रहने वाले लोगों के मस्तिष्क में उभरते हैं।

बालगीत सुनने सुनाने की प्रथा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। जो आनंद दादा-दादी, नाना-नानी को माता-पिता से बालगीत सुनने में आता है उसकी तो बात ही निराली होती है। इनके पास तो थोड़े-बहुत बालगीतों, धार्मिक गीतों की आधी-अधूरी पंक्तियाँ या बोल ही सही, होते ज़रूर हैं। अगर बचपन से ही छोटे बच्चों को बालगीत की सचित्र पुस्तकों के माध्यम से बालगीत सुनाया जाए तो बच्चों में पढ़ने की जिज्ञासा खुद-ब-खुद उत्पन्न हो जाती है। दूसरी तरफ यदि बच्चा अपने आसपास के वातावरण में माता-पिता तथा अन्य वयस्कों को अखबार, पत्र-पत्रिका आदि पढ़ते हुए देखता है तो उसके स्वभाव में पढ़ने की ललक स्वयं जागती है। माता-पिता अथवा अभिभावकों को बच्चों को भी उनके स्तर की सचित्र बालगीत पुस्तकें ला कर देनी चाहिए। यह भी एक तरह से बच्चों को बालगीत गुनगुनाने या पढ़ने के लिए तैयार करना है। इसके विपरीत यदि आप निरंतर टेलीविज़न ही देखते रहते हैं तो बच्चों पर भी वैसा ही असर पड़ेगा। टेलीविज़न अधिक समय बिताने से छोटे बच्चे पर बहुत बुरा असर पड़ता है। ऐसे में चाहिए कि बच्चों से रोचक गतिविधि कराई जाए और बालगीत जैसी रुचिकर विधा की क्रिया के खेल के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन किया जाए।

प्रस्तुत लेख में निम्न विषय पर विशेषकर चर्चा की गई है—

- बालगीत का महत्व क्या है?
- बालगीत का चयन कैसे करना चाहिए?
- बालगीत किस प्रकार सुनाना चाहिए?

### *बालगीत का महत्व*

बालमन बहुत कोमल होता है। बच्चों को जिस प्रकार का वातावरण देते हैं बच्चे के मन पर उसका वैसा ही प्रभाव पड़ता है। इसीलिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप बालगीत सुनाएँ जाएँ। आजकल बालगीत सुनाने को बच्चे के संवेदनशील विकास का सर्वाधिक लोकप्रिय व सुंदर माध्यम माना जाता है। आजकल अभिभावक अपने बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा भाषाई विकास के लिए बहुत जागरूक हो गए हैं। ऐसे में बालगीत सुनाना, स्कूल व घर में एक अत्यंत महत्वपूर्ण गतिविधि हो गई है। शिक्षक को यह चाहिए कि अपनी पाठशाला की समय-सारिणी या कार्यक्रम योजना में बालगीत के लिए भी समय रखें। बालगीत बच्चों का ध्यान बहुत सरलता से अपनी और खींच लेते हैं और साथ ही बच्चों को भरपूर मनोरंजन में पढ़ाई के बोझ से राहत दिलाते हैं। यही नहीं बालगीत के माध्यम से शिक्षक कई कठिन अवधारणाओं को सरल तरीके से समझा सकते हैं।

प्रायः बालगीत सुनाते समय बच्चे शब्दों के अर्थ सरलता से समझ लेते हैं। इन शब्दों का उपयोग अपनी दिनचर्या में इस्तेमाल किए जाने वाले वाक्य में सुगमता से कर पाते हैं। बालगीत के माध्यम से उन्हें कई विषयों से संबंधित सामान्य जानकारी भी मिलती है और वे धीरे-धीरे किताबों में रुचि लेने लगते हैं। इस तरह बच्चों को बालगीत सुनाने से उनमें बालगीतों के प्रति रुचि तथा पठन तत्परता भी आती है यानी वह पढ़ने के लिए तैयार होने लगता है। छोटे बच्चों में

© NCERT not to be republished

बालगीत सुनने की ललक व मुद्रण के प्रति आकर्षण और भी तीव्र होता है, जब वह—

- अपने आसपास माता-पिता, बड़ों व अन्य को पढ़ते हुए देखता है।
- बड़ों द्वारा बालगीत सुनता है।
- बालगीत पढ़ने के लिए किताबों की माँग करता है।
- दूसरों के साथ बैठ बाँटकर बालगीत किताब के पन्ने पलटता है।
- पुस्तक को पढ़ने का अभिनय करता है तथा अपने से छोटे भाई-बहन को सचित्र पुस्तकें दिखाता है।

बालगीत नैतिक मूल्य और सामाजिक कौशल को बच्चों में विकसित करने में भी मदद करते हैं। कई बार बालगीत सुनते समय बच्चों को महसूस होता है कि वह बालगीत के पात्र से मिलता-जुलता है। उदाहरण के तौर पर अगर बच्चा अपने घर के लोगों की नकल करता है या उनकी तरह व्यवहार करने का प्रयास करता है तो उसे टोके मत, बल्कि प्रोत्साहित करें। उसे बालगीत के माध्यम से गाने-गुनगुनाने या पढ़ने का अवसर दें।

बालगीत छोटे बच्चों को अभिनय करने के नए-नए अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही विषय की सौंदर्यानुभूति के साथ आत्मसात करने में भी मदद करते हैं।

उदाहरण के लिए, 'चकई के चकदुम' बालगीत के द्वारा बच्चे बाल-समूह में न केवल आनंद लेंगे बल्कि खेलते-कूदते बालगीत की ओर आकर्षित होंगे। साथ ही इसे घर पर अपने माता-पिता को सुनाएँगे। ऐसे बालगीतों को सुनकर पढ़ाई के प्रति इनकी रुचि और अधिक विकसति होगी। जैसे—

*चकई के चकदुम, चकई के चकदुम।*
*गाँव की मड़ैया, साथ रहे हम-तुम।*

(इन पंक्तियों के समय के बच्चे गलबांहे डाल खुशी-खुशी गाते हुए उछल-कूद करेंगे।)

*रिमझिम-1, रा.शै.अ.प्र.प.*

*चकई के चकदुम, चकई के चकदुम।*
*ग्वाले की गैया, दूध पिएँ हम-तुम।*

(यहाँ पर उपरोक्त दी गई पंक्तियों की दूसरी पंक्ति बच्चे हाथ से दूध पीने का संकेत करते हुए बालगीत की पंक्तियाँ गाते हैं।)

इसी तरह बच्चे शेष बालगीत को स्वयं से शिक्षक की सहायता से पूरा करेंगे। गौर करने वाली बात यह होगी कि बच्चे बलपूर्वक नहीं बल्कि स्वप्रेरित होकर आह्लादपूर्ण वातावरण में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनेंगे।

बालगीत सुनाने के बाद आप बच्चों से रोचक गतिविधियाँ करा सकते हैं। जैसे बच्चों से पूछा जाए कि चकई के चकदुम पर तुम और क्या-क्या करना चाहते हो? इस पर वे अपनी बालकल्पनाएँ प्रस्तुत करेंगे। इतना ही नहीं ऐसी गतिविधियों से जहाँ बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलेगा वहीं उनकी सुंदर अनुभूति का भी विकास होगा। ऐसी गतिविधियों द्वारा बच्चों का आकलन भी बड़ी सरलता तथा सहजता के साथ किया जा सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे खेल-खेल में बालगीत सुनते या गाते या गुनगुनाते हुए खासतौर

© NCERT not to be republished

से सचित्र पुस्तकों के माध्यम से धीरे-धीरे पढ़ने की तैयारी कर लेते हैं। यानी कि बालगीत की किताबों में वाक्यों के नीचे उँगली के बाएँ से दाएँ की दिशा में फिराना, बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करता है। यह रुचिकर तो होती ही है, साथ ही पढ़ने की तैयारी की क्रिया भी है। इसमें बच्चों को लिखे या छपे हुए वाक्यों का महत्व समझ नहीं आता हैं। शिक्षक को चाहिए कि प्रभावशाली रूप से बालगीत सुनने के लिए वह स्वयं बालगीत सुनाने के लिए उत्साह तथा रुचि जगाए।

***बालगीत का चयन***

लेख के आरंभ में इस बात पर चर्चा की गई कि बालगीत सुनने-सुनाने से बच्चे कितने प्रकार से लाभ उठा सकते हैं, किंतु यह तो जाना ही नहीं कि बालगीत का चुनाव का चयन किस प्रकार करना चाहिए। नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान से पढ़ें—

- बालगीत बच्चों के आसपास के वातावरण से संबंधित होने चाहिए, जैसे— जानवर, पेड़-पौधे, पक्षी, त्यौहार, रोज़मर्रा की पारिवारिक घटना आदि।
- बालगीत सचित्र होने चाहिए।
- बालगीत का चयन बच्चों की आयु के अनुसार होना चाहिए।
- छोटे बच्चों को डराने, भयभीत करने वाले बालगीत नहीं सुनाने चाहिए।
- बालगीत जहाँ तक संभव हो यथार्थ से जुड़े होने चाहिए। राक्षस, परियों के बालगीत न सुनाएँ। अभी बच्चे वास्तविक जगत से परिचित नहीं हुए हैं इसलिए उन्हें वास्तविक या काल्पनिक चीजें ना सुनाएँ।
- 5 से 6 आयु के बच्चे यथार्थ को कल्पना लोक से अलग कर पाने में सक्षम होते हैं। इन्हें सुनाए जाने वाले बालगीत तीन–चार वर्ष आयु वर्ग से थोड़े जटिल हो सकते हैं।
- 7 से 8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे पशु-पक्षी, विज्ञान तथा अन्य तुकात्मक बालगीतों से आनंदित होते हैं। ये बच्चे, छोटे बच्चों के विपरीत लंबे बालगीत अधिक पसंद करते हैं।
- बच्चे की रुचि, जिज्ञासा व समझ के अनुसार बालगीत का चयन करें।
- छोटे बच्चों की बालगीत की पुस्तकें उनके हिसाब से आकर्षक रंगीन, सचित्र व मोटे अक्षरों में होनी चाहिए। हालाँकि, अब तक वह किसी भी दृश्य माध्यम के बिना भी बालगीत बखूबी सुना या गा सकते हैं।
- बालगीत के विविध प्रकारों का चयन करें जो विविध श्रेणियों के हों, अर्थात् बालगीत को विविध संदर्भ में रखकर देखा जाए।
- उपलब्ध पुस्तकालयों से बालगीत की पुस्तकें ली जा सकती हैं।
- बालगीत का विषय या मुख्य मुद्दे की महत्ता होनी चाहिए। बालगीत की पुस्तक अथवा बालगीत ऐसा होना चाहिए कि मस्तिष्क पर एक छाप छोड़े। अन्य शब्दों में सुंदर बालगीत या पुस्तक बच्चे हमेशा याद रखते हैं और दोबारा-दोबारा उन्हें सुनना या गाना पसंद करते हैं।
- बालगीत के साथ-साथ उनके पात्र भी सुदृढ़ व सकारात्मक होने चाहिए। ऐसे बालगीत न सुनाएँ जो किसी भी प्रकार की रूढ़िवादिता को दर्शाते हों। जैसे लड़की हमेशा घर का काम करती हुई नज़र आती है या खिलौनो से खेलती रहती है। क्यों न हम ऐसा बालगीत सुनाएँ जहाँ लड़की भी खेलती हो, पतंग उड़ाती हो और लड़के खिलौनों से खेल रहे हों।

© NCERT not to be republished

- बाल गीत छोटे व सरल होने चाहिए।
- एक बार बालगीत का चयन करने के बाद बालगीत सुनाने के लिए तैयारी व व्यवस्था करना तथा उसे कैसे सुनाया जाए, यह आप पर निर्भर करता है। दुर्भाग्यवश कई शिक्षक बच्चों को बालगीत सुनाते हैं किंतु उसकी तैयारी के लिए समय नहीं निकालते। अगर बालगीत पुस्तक से पढ़कर सुनाते हैं तो शिक्षक को चाहिए कि वह बालगीत भली-भाँति पढ़ें जिससे वह किताब के हर पृष्ठ तथा बालगीत के उद्देश्य से परिचित हो जाएँ।
- बालगीत की घटनाओं के क्रम को भली-भाँति से समझ लें। बालगीत के उद्देश्य, पात्र एवं उनके नाम को स्मरण कर लें।
- कक्षा में बालगीत सुनाने से पहले एक बार उसका अभ्यास अवश्य कर लें।
- अगर दृश्य सामग्री, कठपुतली आदि के साथ बालगीत सुनाया जाता है तो पहले उसका अभ्यास कर लें।
- उचित हाव-भाव के साथ अभ्यास करें।
- बालगीत में आए कठिन शब्दों के लिए सरल शब्द ढूँढ़ कर रखें जिससे बालगीत सुनाते समय दिक्कत का सामना न करना पड़े।

***कैसे सुनाएँ बालगीत?***

ध्यान रहे आप बिना दृश्य सामग्री के भी स्वयं से हाव-भाव द्वारा खूबसूरती से बालगीत सुना सकते हैं।

- फ़्लिपचार्ट — बालगीत के चित्रों को बड़े चार्ट पेपर पर चिपकाए हुए स्पाइरल बाइडिंग करा दें। फिर पंक्तियों से संबंधित वाक्यों को चार्ट के पीछे लिख दें, जिससे बालगीत सुनाते समय चित्र बच्चों के समक्ष और वाक्य आपके सामने हो। इस प्रकार शिक्षक बालगीत सुनाते समय बच्चों को देख सकते हैं। आँखों से भी उनसे बात कर सकते हैं।
- तस्वीर या किसी सामग्री द्वारा, जैसे— गुड़िया, कठपुतली, खिलौने आदि।
- फ़्लैनल बोर्ड तथा बालगीत कटआउट्स।
- कैसेट या सीडी के साथ, बालगीत कार्ड के द्वारा।
- शिक्षक द्वारा अभिनय गायन।
- बालगीत सुनाते समय उपयुक्त अभिनय का प्रदर्शन।
- फ़िल्म, फ़िल्म स्ट्रिप्स, स्लाइड आदि के द्वारा।
- बालगीत मूवीबॉक्स—गत्ते के डिब्बे का टी.वी. बनाकर अंदर बालगीत से संबंधित चार्ट रोल ओवर में लगा देना।
- चॉक टॉक बालगीत — श्यामपट्ट पर चित्र बनाते हुए बालगीत सुनाएँ।
- हर बच्चे को बालगीत से संबंधित चित्र अथवा सामग्री पकड़ा दें और बालगीत गाने के लिए कहें।
- कंप्यूटर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

**प्रस्तुतीकरण**

यह ध्यान देने की बात है कि बालगीत सुनते या सुनाते समय हर बच्चे के लिए पर्याप्त जगह हो। बालगीत सुनाने वाले व्यक्ति के हाथ में कठपुतली को साफ़-साफ़ देख पाएँ।

- सभी बच्चों की तरफ़ ध्यान दें तथा नेत्रों की गति बनाए रखें।
- आपका बालगीत सभी बच्चों तक पहुँचना चाहिए। आवाज़ में उतार-चढ़ाव रखें।
- हाव-भाव बालगीत के अनुरूप हो।
- खुद भी बालगीत का आनंद लें तभी बच्चे उसका आनंद लेंगे। पात्र को जीवंत करने के लिए खुद उस पात्र को जिएँ। उसे महसूस करते हुए बालगीत सुनाएँ।

© NCERT not to be republished

- बालगीत को जीवंत, समृद्ध तथा सार्थक बनाने के लिए अपने अनुभव के आधार पर बालगीत सुनाएँ।
- कभी-कभी बालगीत के पात्रों की जगह बच्चों के नाम का भी इस्तेमाल करें।
- स्वयं से प्रश्न करें — क्या मैंने वाकई बालगीत सुनाया या बालगीत पढ़ा?
- क्या बालगीत सुनाते समय मैंने बच्चों की रुचि बनाए रखी?
- क्या मेरे चेहरे के हाव-भाव बालगीत के अनुरूप थे?
- क्या मेरी आवाज़ स्वाभाविक और उत्साहपूर्ण थी?
- क्या दृश्य सामग्री उपयुक्त और इस्तेमाल करने में सरल थी?
- क्या बच्चों ने बालगीत धैर्य से सुना और मज़ा लिया?

शिक्षक निरंतर बच्चों के साहित्य से जुड़ाव रखें। यहाँ यह भी सुझाव ज़रूरी है कि एक अच्छे शिक्षक को बाल साहित्य की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

## निष्कर्ष

बालगीत शिक्षण के पीछे एक उद्देश्य कल्पनाशीलता का विकास करना है। बालगीत की नयी पंक्तियाँ बनाना, कुछ शब्द चुनकर उनकी सहायता से बालगीत लिखना, बालगीत में नए बिंब किस तरह उपयोग में लाए जा सकते हैं, इन पर बातचीत करना आदि, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके लिए कक्षा में नियमित बालगीत सुनाने के बाद उसी बालगीत की पंक्तियों को आगे बढ़ाना, शिक्षिका द्वारा दिए गए कुछ शब्दों के प्रयोग से बालगीत की नयी पंक्ति रचना, बिंब विधान पर बातचीत करना और किसी विषयवस्तु के लिए किस तरह के बिंब हो सकते हैं आदि पर बातचीत भी कक्षा प्रक्रिया का हिस्सा हो सकती है। इसी तरह यदि उद्देश्य बच्चों को बालगीत की संरचना से परिचित कराना है तो बच्चों को अलग-अलग तरह के बालगीत पढ़ने के लिए देने होंगे जो तुकांत और गाने योग्य हों। ताकि वे उनमें अंतर पहचान सकें और उनकी संरचना को समझ सकें। इन बालगीतों पर बातचीत के बाद उन्हें इस तरह की कुछ बालगीत समूह में रचने के लिए भी कहा जा सकता है। कुल मिलाकर बालगीतों से बच्चों में कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता तथा सृजनशीलता का विकास होता है।

## संदर्भ


जीत, योगेंद्र. 2014. *हिंदी भाषा शिक्षण*. श्री विनोद पुस्तक मंदिर. आगरा, उत्तर प्रदेश.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति. 1986. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

रा.शै.अ.प्र.प. 2000. *रिमझिम*. (कक्षा-1), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2000. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2000*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2009. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 भारतीय भाषाओं का शिक्षण*. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.


© NCERT not to be republished